तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बाल सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

नवम्बर-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

मुनिवाहन

विषयसूची

हिन्दू देवता	**लक्ष्मीदेवी** डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	32
पन्निद्दराल्वार	**तिरुप्पाणाळ्वार** श्री कमल किशोर हि. तापडिया	34
कन्नड हरिदासवरेण्य	**श्री प्रसन्न वेंकट दास** श्रीमती सी.मंजुला	36
चित्रकथा	**पद्म सरोवर** तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्रकार - श्री के.द्वारकानाथ	38
बालनीति	**संत की ऊँची सोच** श्री सी.सुधाकर रेड्डी	42
विशिष्ट बालिका		44
'क्विज'	डॉ.जी.मोहन नायुडु	45
चित्रलेखन		46

मुखचित्र - श्री महालक्ष्मी।

चौथा कवर पृष्ठ - नरकासुर को वध करते हुए श्री सत्यभामा देवी।

हिन्दू देवता

लक्ष्मीदेवी

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

'लक्ष्मी' हिंदू धर्म की एक प्रमुख देवी है। वह भगवान विष्णु की पत्नी है। पार्वती और सरस्वती के साथ वह त्रिदेवियों में से एक है। धन, सम्पदा, शांति और समृद्धि की देवी मानी जाती है। शास्त्रों के अनुसार देवी लक्ष्मी का जन्म शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। लक्ष्मी शद्ब दो शद्बों के मेल से बना है एक 'लक्ष्य' तथा दूसरा 'मी' अर्थात् लक्ष्य तक ले जाने वाली देवी लक्ष्मी। श्रीदेवी, कमला, धन्या, दीपा, विष्णुप्रिया, पद्मसुंदरी, पद्मावती, पद्मिनी, चंद्रसहोदरी आदि नाम लक्ष्मी की प्रमुख अन्य नाम हैं। क्षीरसागर में भगवान विष्णु के साथ कमल पर वास करती हैं। ज्योतिष शास्त्र एवं धर्मग्रंथों में शुक्रवार की देवी माँ लक्ष्मी को माना गया है।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते,
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते!!

इंद्र बोले, श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये! तुम्हे नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मी! तुम्हे प्रणाम है।

समुद्र मंथन के दौरान लक्ष्मी की उत्पत्ति भी हुई। देवताओं तथा दानवों ने मिलकर अधिक संपन्न होने हेतु समुद्र का मंथन किया। समुद्र मंथन से १८ रत्न प्राप्त हुए। जिन में देवी लक्ष्मी भी थी जिन्हें भगवान विष्णु को प्रदान किया गया था। इस कारण देवी कमला, जगत पालन कर्ता व भगवान विष्णु की पत्नी कही गई है। समुद्र मंथन से निकली लक्ष्मी को वैभव और समृद्धि से जोड़कर देखा गया। जिसमें सोना, चांदी आदि कीमती धातुएँ थी जो कि लक्ष्मी का प्रतीक है।

गायत्री की कृपा से मिलनेवाले वरदानों में एक लक्ष्मी भी है। जिस पर यह अनुग्रह उतरता है, वह दरिद्र, दुर्बल, कृपण, असंतुष्ट से ग्रसित नहीं रहता।

महालक्ष्मी के अनेक रूप है जिसमें से उनके आठ स्वरूप जिन को अष्टलक्ष्मी कहते है। लक्ष्मी का अभिषेक दो हाथी करते हैं। वह कमल के आसन पर विराजमान है। लक्ष्मी के एक मुख चार हाथ हैं। वे लक्ष्य और चार प्रकृतियों के प्रतीक हैं। दो हाथों में कमल सौंदर्य और प्रमाणिकता के प्रतीक है। दान मुद्रा से उदारता तथा आशीर्वाद मुद्रा से अभय अनुग्रह का बोध होता है। एक मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु की पत्नी देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू है और धन की देवी महालक्ष्मी का वाहन हाथी है।

एक अन्य मान्यता के अनुसार लक्ष्मी के दो रूप हैं भूदेवी और श्रीदेवी। भूदेवी धरती की देवी हैं और श्रीदेवी स्वर्ग की देवी। भूदेवी सरल और सहयोगी पत्नी हैं जब कि श्रीदेवी चंचल है। पुराणानुसार लक्ष्मीजी के ८ अवतार है। महालक्ष्मी जो वैकुण्ठ में निवास करती हैं। स्वर्गलक्ष्मी जो स्वर्ग में निवास करती हैं। राधाजी जो गोलोक में निवास करती हैं। दक्षिणा जो यज्ञ में निवास करती हैं। गृहलक्ष्मी जो गृह में निवास करती हैं।

तिरुचानूर स्थित श्री पद्मावती नाम से भी जाननेवाली देवी भगवान विष्णु के श्री वेंकटेश्वर अवतार की पत्नी है, जिन्हें बालाजी भी कहा जाता है। भगवती देवी 'वेदवती' के रूप में अवतार लेकर भगवान श्रीनिवास से विवाह संपन्न किया। श्रीलक्ष्मी धन प्राप्ति मंत्र पुराणों में इस प्रकार वर्णन किया है-

ॐ महालक्ष्म्यै नमो नमः
विष्णुप्रियायै नमो नमः
धनप्रदायै नमो नमः
विश्वजनन्यै नमो नमः

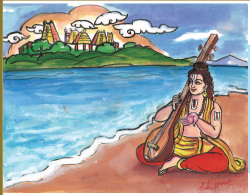

तिरुप्पाणाळ्वार

- श्री कमल किशोर हि. तापडिया

कार्तिक महीने की पूर्णिमा तिथि और रोहिणी नक्षत्र से युक्त सोमवार के दिन निचुलापुरी में श्री पाण सूरि ने किसी ब्राह्मण के खेत में धान के गुच्छा से भगवान के श्रीवत्स के अंश से अवतार धारण किया। यद्‌यपि श्री पाण (मुनिवाहन) सूरि अयोनिज थे - अर्थात् माता के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए थे फिर भी उनका बाल्यकाल शूद्र के घर में बीता, इसलिए उनके विषय में शूद्रकुलोत्पन्न होने की बात कही जाती है। किन्तु जिस जीव पर भगवान की कृपा हो जाती है, वे जाति, कुल इत्यादि से ऊपर उठकर सात्विक पुरुष हो जाते हैं, और सदा भगवान के अपरिमित ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति, तेज, बल, ज्ञान, प्रभृति ऐश्वर्यों का चिन्तन करते हुए उनके चरणारविन्द को अपना एक मात्र लक्ष्य मानकर समय व्यतीत करते हैं।

श्री पाण सूरि श्रीरंगधाम के सन्निकट निचुलापुरी में निवास करते थे। भगवान की अहैतु की कृपा के कारण उनका हृदय स्वच्छ बन गया था। श्री विष्वक्सेन की कृपा से ज्ञानी और वैरागी होकर सांसारिकता से ऊपर उठकर पंचसंस्कार से संस्कृत होकर भागवतोत्तम बन गये थे। वे सदा भगवान के गुणों का गान करते थे।

भगवान श्रीरंगनाथ के ही गुणों का गान करते हुए मुनि कभी-कभी आनंदअश्रुओं से आप्लावित हो जाते थे और रोमांचित हो जाते थे। वे भगवान के ही भक्ति के रस में लीन रहकर दूसरे सभी सांसारिक कार्यों को भूल जाते थे। उनके मन में यह भावना बनी रहती थी कि भगवान रंगनाथ की परम पवित्र नगरी श्रीरंगम को मैं अपने पैरों से कैसे स्पर्श करूँ? वहाँ मेरा जाना पाप और अनुचित समझा जाएगा। फलतः श्रीनिचुलापुरी की भूमि पर रहकर बैठे-बैठे सात प्रकारों से घिरी श्रीरंगम नगरी को ज्ञान दृष्टि से देखा करते थे। श्रीरंग में सारंग नामक महायोगी श्रीरंगनाथ भगवान के नित्य कैंकर्य में रहते थे। एक बार वे महायोगी कावेरी के विमल जल के लिये स्वर्णकुम्भ लेकर कावेरी तट पर पधारे, तो वहीं पर श्री पाण सूरि तट पर विराजमान थे। उन्हें देखकर उन्होंने दूरी से ही कहना शुरू किया कि हट जाओ, हट जाओ। किन्तु ध्यानमग्न सूरि को उनकी आवाज सुनाई नहीं दी।

सारंग मुनि और अन्य लोगों ने उनकी स्थिति को ढोंग समझकर उन पर पत्थर फेंकना प्रारम्भ किया, लेकिन श्री पाण सूरि इन सब बातों से अनजान थे। उनका

सारा शरीर लहूलुहान हो गया। भगवान के ही गुणों के अनुसंधान में रत श्री पाण सूरि को इसका कोई पता भी नहीं चला। उनकी यह स्थिति देखकर ब्राह्मणों को आश्चर्य हुआ और श्री पाण सूरि भी अपने संगीतात्मक कृत्य करके आश्रम पधार गये। उस समय भी उन्हें उस शिला प्रहार के कारण कुछ भी वेदना नहीं हो रही थी। किन्तु इससे भगवान श्रीरंगनाथ को महान कष्ट हुआ और उनके श्रीविग्रह के ललाट से रक्त की बूंदें टपकने लगीं, इस दृश्य को देखकर अर्चकों को महान भय हुआ। सारंग योगी को इस घटना से श्री पाण सूरि की वैभवता का ज्ञान हुआ।

भगवान श्रीरंगनाथ लक्ष्मीजी की विनंती से सारंग मुनि के स्वप्न में कहा कि- ''आप मेरे प्रिय भक्त श्री पाण सूरि को उसके घर से कंधे पर उठाकर मेरे दर्शन के लिए मेरी सन्निधि में ले आओ।'' सारंग मुनि प्रातः उठकर श्री पाण सूरि के घर पर जाकर भगवान की आज्ञा सुनाकर उनसे श्रीरंगम पधारने के लिए प्रार्थना करने लगे। आपकी प्रार्थना सुनकर श्रीसूरि बोले - श्रीमन मैं मातंग कुलोत्पन्न व्यक्ति हूँ इसलिए किस तरह अपने पैरों से श्रीरंगधाम की भूमि को तथा अपने सम्बन्ध से वहाँ की पवित्रता को अशुद्ध करूँ। सारंग मुनि ने भगवान की आज्ञा याद दिलाई और कहा कि आओ मेरे का काँधे पर छडकर पधारिये। आपकी यह बातें सुनकर और भगवान की आज्ञा समझकर श्रीसूरि अपनी नीचता प्रकट करते हुए बोले कि ''भगवान की आज्ञा जैसी है वैसा ही आप करें।'' इसके बाद वे हाथ जोडकर नैच्यानुसन्धान करते हुए सारंग मुनि के सामने खडे हो गये।

श्रीसारंग महायोगी श्री पाण सूरि को अपने कन्धों पर छडाकर गरुड के समान श्रीरंगनाथ भगवान के मण्डप में पहुँचा दिए। जिस समय श्रीसूरि श्रीरंगम पहुँचे उस समय भगवान की आज्ञा से वैदिक ब्राह्मण सामवेद का पाठ कर रहे थे। उसी समय श्रीसूरि ने भगवान के विमान की प्रदक्षिणा की और फिर वे भगवान की सन्निधि में पधारे। उन्होंने श्रीसूरि को अपने दिव्य सौन्दर्यमयी श्रीविग्रह का दर्शन कराया। श्री पाण सूरि भगवान के दिव्य सौंदर्य का दर्शन कर भाव विभोर हो गए। उसी समय उनके मुख से भगवान के वैभव के प्रति दिव्य वचन प्रस्फुटित हुए। १० पाशुर के इस प्रबन्ध को 'अमलनादि पिरान' नाम से जाना जाता है। श्रीसूरि प्रबन्ध को निवेदन करते-करते भगवान में एकाकार हो गए। श्री पाण सूरि के दर्शन आज भी हम श्रीरंगनाथ भगवान के श्रीचरणों में कर सकते हैं। सारंग मुनि भगवान की आज्ञा से इनके वाहन बने, इसलिए इनको योगीवाहन एवं मुनिवाहन नाम से जाना जाने लगा।

शिक्षा-मनुष्य को अपने जीवन में अपने स्वरूप को बनाए रखने और भगवान की प्राप्ति के लिए नैच्यानुसन्धान से रहना चाहिए। नम्रता जीवन का भूषण होता है।

कन्नड हरिदासवरेण्य

श्री प्रसन्न वेंकट दास

- श्रीमती सी.मंजुला

श्री प्रसन्न वेंकट दास का जन्म सन् १६८० में बागलकोट में हुआ था, जो कर्नाटक राज्य में एक जिला मुख्यालय है। जो 'घटप्रभा' नदी के तट पर स्थित है। उनके बचपन का नाम वेंकन्ना था। उनके पिता श्री नरसप्पय्या काकंदकी एक विद्वान माधव (द्वैत संप्रदाय) ब्राह्मण थे, जो वैदिक शास्त्रों, द्वैत शास्त्रों और पुरोहिती के कर्मकांडों में पारंगत थे। वेंकन्ना की माँ, लक्ष्मीबाई एक महान साध्वी और तिरुपति श्री वेंकटेश्वर की भक्तिन थीं। वे मूलरूप से बीजापूर (कर्नाटक राज्य) के पास काकंदकी गाँव के थे, जो प्रसिद्ध ब्राह्मण अग्रहारों में से एक थे। काकंदकी गाँव के एक अन्य प्रसिद्ध हरिदास श्री महिपति दास थे।

१७वीं शताब्दी के दौरान, बीजापुर को मोगल शासक द्वारा आक्रमण किया गया था। कई ब्राह्मण पंडित काकंदकी गाँव छोडकर अन्य स्थानों पर चले गए। श्री नरसप्पय्या का परिवार भी उनमें से एक था, जो बागलकोट में आया था। बागलकोट दर्शन शास्त्र के द्वैत स्कूल के वेदपंडितों का एक अन्य प्रसिद्ध अग्रहार था। बागलकोट की ओर प्रस्थान करने के बाद, नरसप्पय्या अपने पहले बेटे राघवेन्द्र और पत्नी लक्ष्मीबाई के साथ किला सड़क के छोटे से घर में रहते थे। श्री राघवेन्द्र ने द्वैत गुरुकुल में संस्कृत और वेदाध्ययन करके वैदिक विद्वान बन गए। नरसप्पय्या एक महान विद्वान होने के साथ ही, कई लोगों को वेदांत भी सिखाते थे। नरसप्पय्या और उनकी पत्नी भगवान श्री वेंकटेश्वर के कट्टर भक्त थे।

कई सालों के बाद वेंकन्ना, इस जोडे के साथ अपने बुढापे में पैदा हुए थे। नरसप्पय्या और उनकी पत्नी चिंतित थे कि वे इस बेटे को अपने पहले बेटे राघवेन्द्र की तरह कैसे एक महान द्वैत विद्वान बना देंगे। ऐसा सोचकर अंत में दोनों अपने छोटे पुत्र वेंकन्ना की देखबाल भगवान श्री वेंकटेश्वर की कृपा पर छोड़कर स्वर्गवास हुए। राघवेन्द्र और वेंकन्ना अनाथ होगए। कुछ समय तक पडोसियों ने उनकी दैनिक आवश्यकताओं के साथ उनकी मदद की। पड़ोसियों

की सलाह के अनुसार राघवेन्द्र ने कावेरम्मा से शादी की घर में भाभी कावेरम्मा आने के बाद, यहाँ तक कि वैदिक शास्त्र सीखने के बजाए, घरेलू काम एवं गायों को चराने का काम सौंपा गया। इलाके में उनकी उम्र के सभी लड़के वेंकन्ना को छोडकर गुरुकुल में जा रहे थे। उनके भाई के द्वारा इस तरह के अवसर से वंचित किया जा रहा था। उनकी भाभी ठीक से भोजन भी नहीं रखती थी। वेंकन्ना के माता-पिता ने उन्हें अच्छे संस्कार सिखाए थे। नतीजतन वह कावेरम्मा के प्रति संवेदनशील की भावना दिखाया। वेंकन्ना ने इतने कष्टों को सहनने के बाद भाई और भाभी को लगभग १०-१२ साल की उम्र में बताए बिना घर छोड देता है। घर छोडने के बाद, उन्हें अगली सड़क में श्री वेंकटेश्वर के पालकी के साथ चलनेवाले भजन समूह से शामिल होकर तिरुपति-तिरुमल की यात्रा की।

कई महीनों के निरीक्षण के बाद और उनकी शुद्ध और तीव्र भक्ति को देखने के बाद, श्री वेंकटेश्वर स्वामी उनके सामने प्रकट हुए। अपनी जीभ को बाहर निकाला और उनकी जीभ पर पवित्र शब्दों (बीजाक्षरों) ''प्रसन्न विषकटा'' को अंकित किया। उन्होंने तब उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा- ''वेंकन्ना, आप प्रसन्न वेंकट के इस नाम के साथ हरिदास बन जाएँगे। आपका अज्ञान अब समाप्त हो गया, आप अब सभी दिव्य ज्ञान के साथ ज्ञानी है।'' इसके बाद उन्होंने कन्नड में गीतों और भजनों की अपनी भावपूर्ण रचनाओं को गान शुरू किया। उन्होंने अनायास श्रीहरि की स्तुति में सैकड़ों कृतियों की रचना की। सुप्रसिद्ध गीत 'बिडेनोनिन्नंघ्रि श्रीनिवास' इनकी रचना है। भगवान श्री वेंकटेश्वर के प्रति इनके एक कन्नड कीर्तन की पल्लवि इस प्रकार है।

''वेंकटेश श्री वेंकटेश पालिसु। किंकरनवेंकटेश।।
सुवर्णमुखरिलि शिवनुतपादाब्ज। सुवर्णगिरि वेंकटेश।
नव्यचंदन मृगनाभिचर्चितगात्र। अप्राकृतने वेंकटेश।।
हलवु अपराधि नाभूरिदयालु नी। नेलेगे निल्लिसु वेंकटेश।
बलुतम तुंबिद भवदि करुणशशि। बेलकु बेलगु वेंकटेश।।''

कीर्तन का भाव इस प्रकार है- वेंकटेश मेरी रक्षा करो। मैं आपका सेवक हूँ। हे सुवर्ण गिरिवेंकटेश, सुवर्ण मुखरी के तट पर स्थित शिवजी से पूजे जाते है। चंदन, कस्तूरी को धारण करके, अप्राकृत से सजे हुए है। मेरा असंख्य दोषों पर दया कर रहा है। तुम मेरा रक्षा करो। अज्ञान से भरे इस जीवन के लिए ज्ञान से मुक्ति प्रदान करो।

चित्रकथा

पद्म सरोवर

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

श्रीनिवास, सुवर्णमुखी नदी के कूल पर गए। वहाँ, शुक महर्षि के आश्रम के समीप, स्वयं में वे एक सरोवर बनाया। उसके उपरांत स्वामी ने...

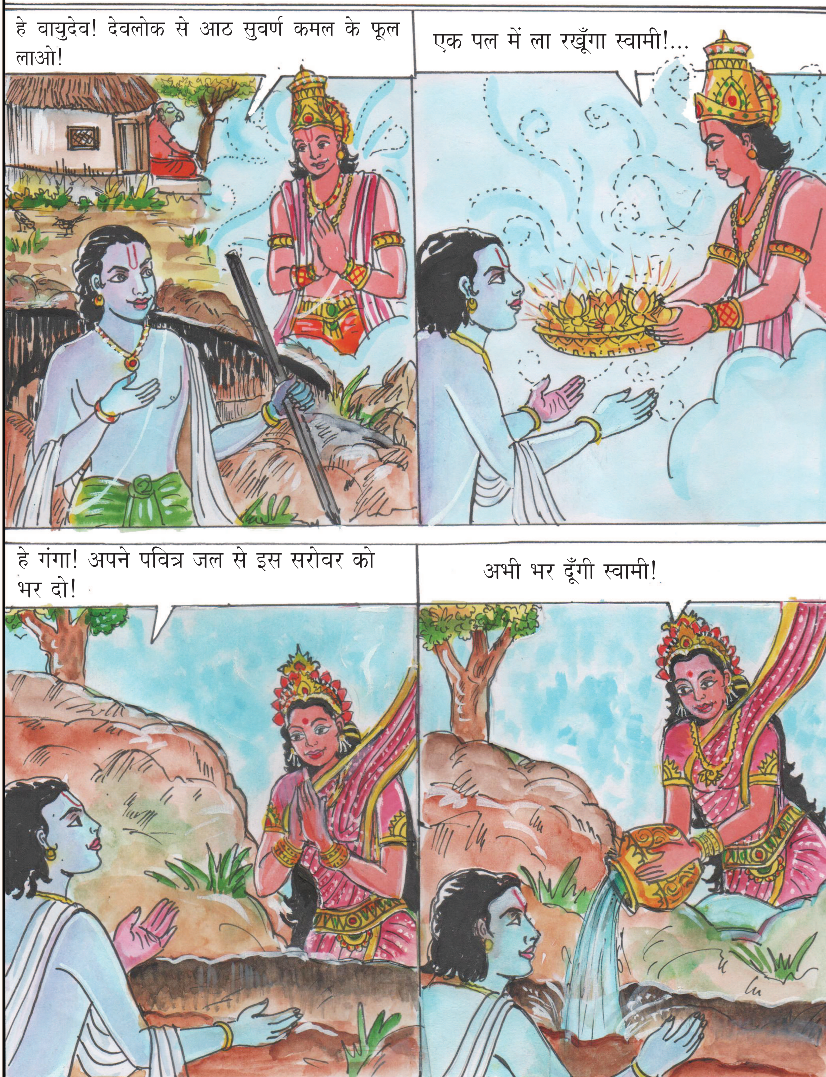

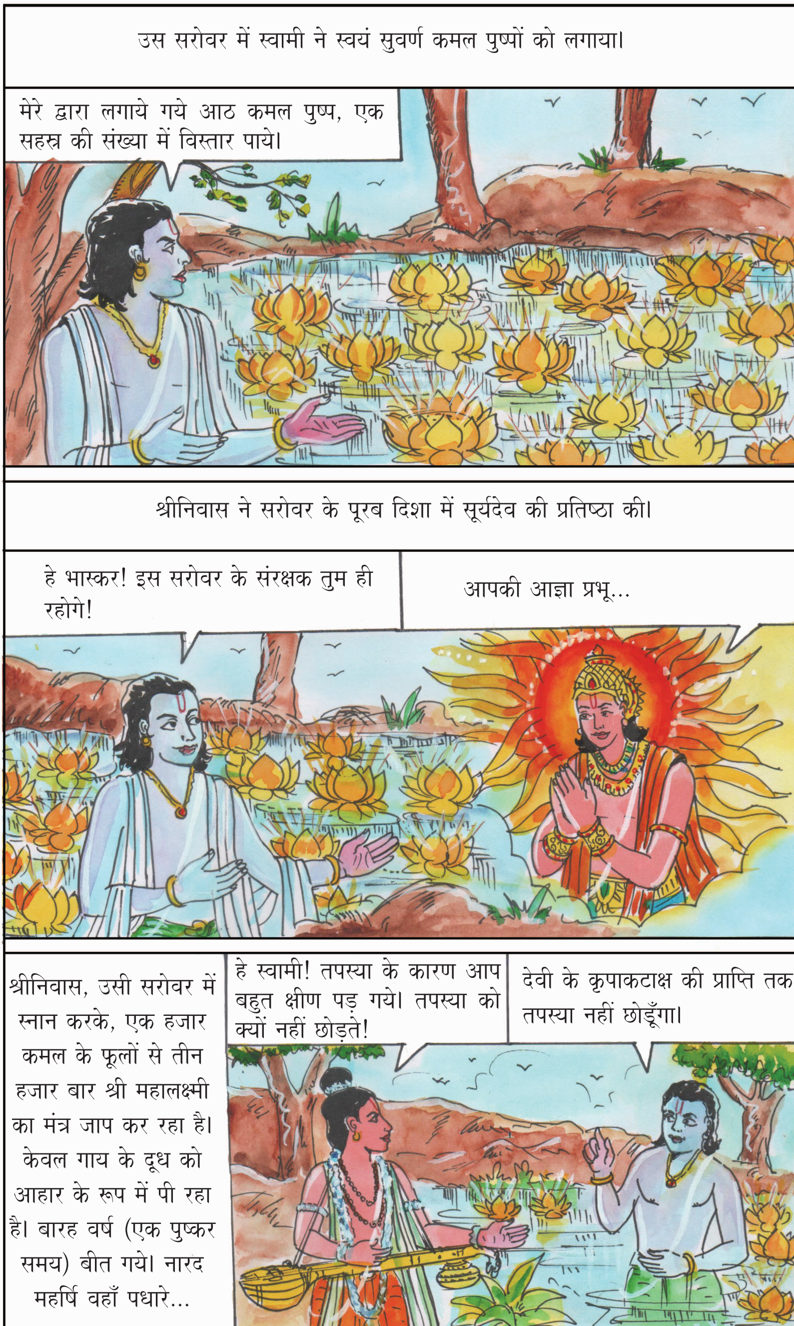
उस सरोवर में स्वामी ने स्वयं सुवर्ण कमल पुष्पों को लगाया।
मेरे द्वारा लगाये गये आठ कमल पुष्प, एक सहस्त्र की संख्या में विस्तार पाये।
श्रीनिवास ने सरोवर के पूरब दिशा में सूर्यदेव की प्रतिष्ठा की।
हे भास्कर! इस सरोवर के संरक्षक तुम ही रहोगे!
आपकी आज्ञा प्रभू...
श्रीनिवास, उसी सरोवर में स्नान करके, एक हजार कमल के फूलों से तीन हजार बार श्री महालक्ष्मी का मंत्र जाप कर रहा है। केवल गाय के दूध को आहार के रूप में पी रहा है। बारह वर्ष (एक पुष्कर समय) बीत गये। नारद महर्षि वहाँ पधारे...
हे स्वामी! तपस्या के कारण आप बहुत क्षीण पड़ गये। तपस्या को क्यों नहीं छोड़ते!
देवी के कृपाकटाक्ष की प्राप्ति तक तपस्या नहीं छोड़ूँगा।

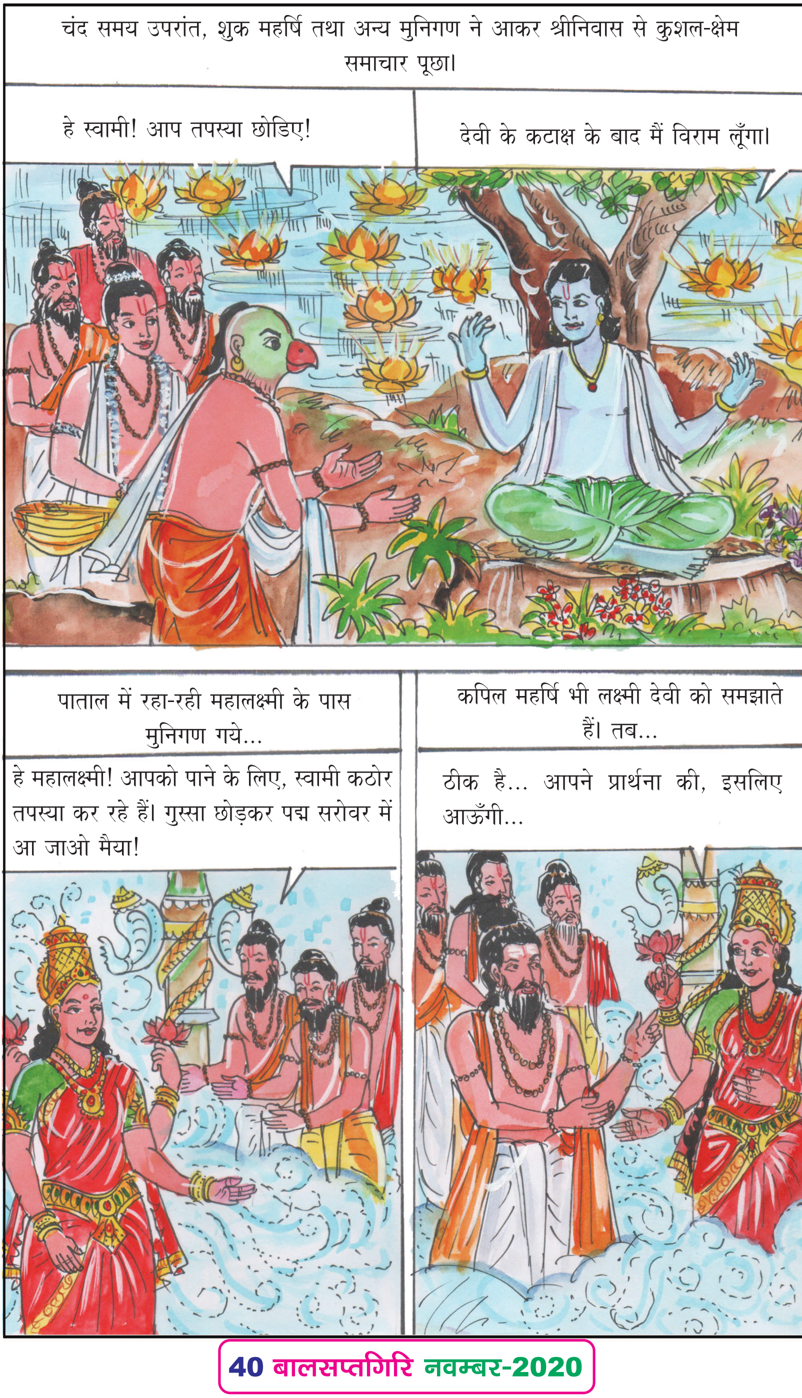
चंद समय उपरांत, शुक महर्षि तथा अन्य मुनिगण ने आकर श्रीनिवास से कुशल-क्षेम समाचार पूछा।
हे स्वामी! आप तपस्या छोडिए!
देवी के कटाक्ष के बाद मैं विराम लूँगा।
पाताल में रहा-रही महालक्ष्मी के पास मुनिगण गये...
हे महालक्ष्मी! आपको पाने के लिए, स्वामी कठोर तपस्या कर रहे हैं। गुस्सा छोड़कर पद्म सरोवर में आ जाओ मैया!
कपिल महर्षि भी लक्ष्मी देवी को समझाते हैं। तब...
ठीक है... आपने प्रार्थना की, इसलिए आऊँगी...

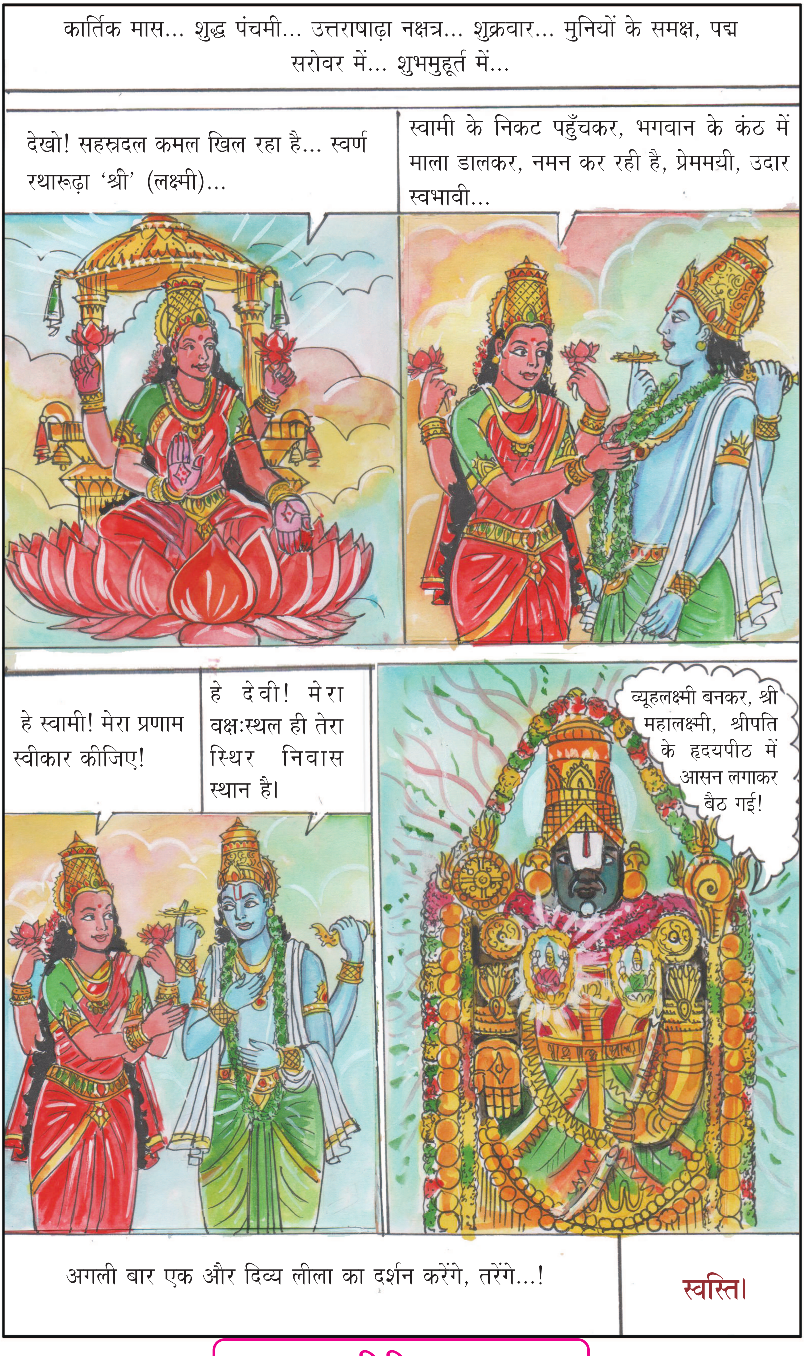
कार्तिक मास... शुद्ध पंचमी... उत्तराषाढ़ा नक्षत्र... शुक्रवार... मुनियों के समक्ष, पद्म सरोवर में... शुभमुहूर्त में...
देखो! सहस्त्रदल कमल खिल रहा है... स्वर्ण रथारूढ़ा 'श्री' (लक्ष्मी)...
स्वामी के निकट पहुँचकर, भगवान के कंठ में माला डालकर, नमन कर रही है, प्रेममयी, उदार स्वभावी...
हे स्वामी! मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए!
हे देवी! मेरा वक्षःस्थल ही तेरा स्थिर निवास स्थान है।
व्यूहलक्ष्मी बनकर, श्री महालक्ष्मी, श्रीपति के हृदयपीठ में आसन लगाकर बैठ गई!
अगली बार एक और दिव्य लीला का दर्शन करेंगे, तरेंगे...!
स्वस्ति।

बालनीति

संत की ऊँची सोच

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

अवंतीपुर में राजाराम नाम का एक जुलाहा रहता था। वह स्वभाव से अत्यंत शांत, नम्र तथा ईमानदार था। उसे क्रोध तो कभी आता ही नहीं था। एक बार कुछ लड़कों को शरारती सूझी। वे सब उस जुलाहे के पास यह सोचकर पहुँचे कि देखे इसे गुस्सा कैसे नहीं आता।

उनमें एक लड़का धनवान माता-पिता का पुत्र था। उनका नाम अमरनाथ था। वहाँ पहुँचकर वह बोला यह साडी कितने की दोगी? जुलाहे ने कहा २० रुपए की। तब लड़के ने चिढाने के उद्धेश्य से साडी के दो टुकडे कर दिए और एक टुकडा हाथ में लेकर बोला- ''मुझे पूरी साड़ी नहीं चाहिए, आधी साडी ही चाहिए।'' इसका क्या दाम लोगे? जुलाहे बड़े शांति से कहा १० रुपए। अमरनाथ ने उस टुकडे के भी दो भाग किए और दाम पूछा? जुलाहा अब भी शांत से रहा। उसने बताया - ५ रुपए। लड़का इसी प्रकार साड़ी के टुकडे करता गया। अंत में बोला- ''अब मुझे यह साडी नहीं चाहिए। ये टुकडे मेरे किस काम के?'' जुलाहे ने शांत भाव से कहा- ''बेटे! अब ये टुकडे तुम्हारे ही क्या किसी के भी काम के नहीं रहे।''

अब अमरनाथ को शर्म आई और कहने लगा- ''मैंने आपका नुकसान किया है। इसलिए मैं आपकी साड़ी का दाम दे देता हूँ।'' जुलाहे ने कहा कि- ''जब आपने साड़ी ली ही नहीं तब मैं आपसे पैसे कैसे ले सकता हूँ''। लड़के का अभिमान जागा और वह कहने लगा, मैं बहुत अमीर आदमी हूँ। तुम गरीब हो। मैं रुपए दे दूँगा तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर तुम यह घाटा कैसे सहोगे? और नष्ट मैंने किया, तो घाटा भी मुझे ही पूरा करना चाहिए।

जुलाहे ने मुस्कुराते हुए कहा- तुम यह घाटा पूरा नहीं कर सकते। सोचो, किसान का कितना श्रम लगा तब कपास पैदा हुई। फिर मेरी पत्नी

ने अपनी मेहनत से उस कपास को बुना और सूत काता। फिर मैंने उसे रंगा और बुना। इतनी मेहनत तभी सफल हो जब इसे कोई पहनता, इससे लाभ उठाता, इसका उपयोग करता है। पर तुम ने असके टुकडे-टुकडे कर डाले। रुपए से यह घाटा कैसे पूरा होगा? जुलाहे की आवाज में आक्रोश के स्थान पर अत्यंत दया और सौम्यता थी।

अमरनाथ शर्म से पानी-पानी हो गया। उसकी आँखे भर आई और वह संत के पैरों में गिर गया। जुलाहे ने बड़े प्यार से उठाकर उसकी पीठ पर हाथ फिराते हुए कहा- बेटा, यदि मैं तुम्हारे रुपए ले लेता है तो उसमें मेरा काम चल जाता। पर तुम्हारी जिन्दगी का वही हाल होता। जो उस साड़ी का हुआ। किसी को भी उससे लाभ नहीं होता। साड़ी एक गई, मैं दूसरी बना दूँगा। पर तुम्हारी जिंदगी एक बार अहंकार से नष्ट हो गई तो दूसरी कहाँ से लाओगे तुम? तुम्हारा पश्चाताप ही मेरे लिए बहुत कीमती है।

सीख : संतों की ऊँची सोच-समझ लोगों के जीवन को बदल देते हैं।

विशिष्ट बालिका

नाम	:	एस.भव्या
जन्म	:	१४ जनवरी, २००९
कक्षा	:	सातवीं कक्षा
विद्यालय	:	सर्वोदया विद्यालय, नालांचिरा, तिरुवनंतपुरम्, केरल।
माताजी का नाम	:	श्रीमती बी.जी.स्मिता
पिताजी का नाम	:	श्री पी.गिरीश चन्द्रन्
कुशलता	:	शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य (भरतनाट्यम्, कुचिपुड़ी), भगवद्गीता पारायण, कळरी।

कला और संस्कृति जो भारत का हृदय माने जाते हैं, उसके शास्त्रीय नृत्य और संगीत के भावुक कलाकार हैं भव्या।

शास्त्रीय संगीत

भव्या ने गुरु श्रीमती लक्ष्मी शुभा के निर्देशन पर पाँच साल की उम्र में शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया था। वे मंच प्रदर्शन भी करती हैं। खासकर उस दिन से भजन गा रही हैं। वे अपनी दस साल की उम्र से श्री ज्योतिकुमार, श्रीमती आशा एस. देव आदि गुरुजनों के अधीन तरंगनीसरी म्यूजिक स्कूल में सीख रही हैं। २०१८ में अपने स्कूल में सुगम संगीत का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

शास्त्रीय नृत्य

वे अपनी गुरु श्रीमती शैजा से भरतनाट्यम् और कुचिपुड़ी सीख रही हैं। २०१९ में अट्टुकल भगवतीयम्मन मन्दिर के नवरात्रि उत्सव पर नृत्य का प्रथम प्रवेश प्रदर्शित किया। उन्होंने मुरजपम संबन्धित नृत्य को पद्मनाभ स्वामी मन्दिर में और पोंगल संबन्धित नृत्य को अट्टुकल भगवतीयम्मन के मंदिर में प्रदर्शित किया है।

भगवद्गीता पारायण

उन्होंने भगवद्गीता पारायण को गुरु श्रीमती लक्ष्मी शुभा से सीख लिया है।

कळरी

केरल की युद्ध कला कळरी को डॉ.गौतमन के मार्गदर्शन पर प्रशिक्षण पाया है।

‘क्विज’

आयोजक - डॉ.जी.मोहन नायुडु

१) भीष्म पितामह का वास्तविक नाम क्या है?

अ) देवव्रत   आ) दीनव्रत

इ) देवदत्त   ई) दीन

२) ‘दमयंती’ के पति का नाम क्या है?

अ) नील   आ) नमित

इ) नल   ई) कोल

३) ‘इन्द्र’ का शस्त्र कौन-सा है?

अ) कुल्हाडी   आ) साँप

इ) वज्र   ई) कनक

४) ‘दशकंठ’ के नाम से कौन प्रसिद्ध है?

अ) सुग्रीव   आ) वालि

इ) रावण   ई) मेघनाथ

५) राम, सीता और लक्ष्मण को गंगा नदी का पार किसने करवाया?

अ) केवट   आ) खर

इ) दूषण   ई) मारीच

६) राजा दशरथ की पुत्रि का नाम क्या है?

अ) सुमित्रा   आ) शांता

इ) कैकेई   ई) शिरीषा

७) ‘रामायण’ में ‘‘जटायु’’ क्या है?

अ) कीट   आ) मनुष्य

इ) पक्षी   ई) नदी

जवाब - १) अ २) इ ३) इ ४) इ ५) अ ६) आ ७) इ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

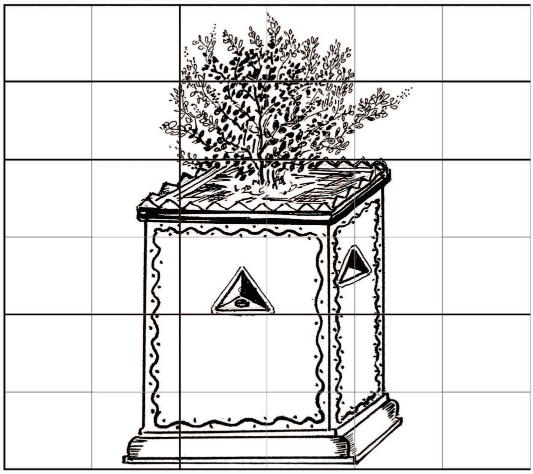

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

नंपाडुवान्

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 25-10-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020